वैदिक उषा : अज्ञानता को मिटाने वाली देवी

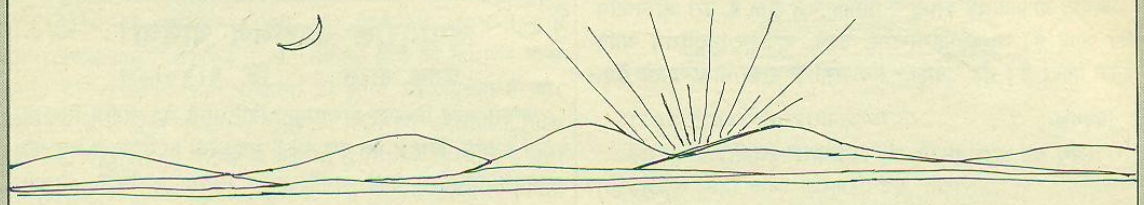

उषस ऋग्वेद की देवी हैं। इन्हें सिन्धु नदी एक सूक्त में देवी के रूप में ख्याति प्राप्त है। (ऋग्वेद १०:७५,२,४,६) ऋग्वेद में उषा मुख्यतः अंधकार का नाश करने वाली देवी के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उषा और नक्ता दोनों देवियां दिन और रात की प्रतीक हैं। ये दोनों देवियां मनुष्यों के उत्तम कर्मों को प्रेरणा देती हैं।

साध्वंपासि सनता न उक्षिते उषासानक्ता वय्येव रण्विते। (ऋ. १/३५/६) आत्म जगत में अंधकार दुःख और निराशा का प्रतीक समझा जाता है। उषा इस दुःख और निराशा को नष्ट करके व्यक्ति के जीवन में आनंद, सुख-समृद्धि, स्फूर्ति और आभा का संचार करती हैं। व्यक्ति इस संसार में आकर दुःख, यातना, निराशा एवं अवसाद से आबद्ध होकर बड़ी अशांति करता है। वह उससे छुटकारा पाने के लिए लालायित रहता है। उषा के आगमन की प्रतीक्षा यानि आनन्द, प्रफुल्लता, स्फूर्ति की प्रतिक्षा।

भारतीय दर्शन और साहित्य में उषःकाल का अत्यन्त महत्त्व स्विकार किया गया है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के एक सूक्त में कहा गया है कि उषःकाल में जो प्रभु की स्तुति करते हैं, वे अग्नि के समान तेजस्वी होते हैं। "गोमतींना उषसां उपायने जरमाणाः अग्नयः न"। इसीलिये अग्नि से कहा गया है कि हे अग्नि! उषाओं द्वारा प्रज्ज्वलित होकर तू हमें अनेक तरह की सम्पत्ति और धन दें। उषःकाल की एक और महिमा कही गई है – "उषसः चेकितानः कवीनां पदवीः अवोधि" (ऋ.२/६१/१) अर्थात उषःकाल में उठने वाला तथा बुद्धिमानों के मार्ग पर जाने वाला ही ज्ञानवान होता है। उषा की स्तुति में जहां यह कहा गया है कि वह अन्न के साथ रहने वाली, उत्तम अन्न तैयार करने वाली, ऐश्वर्यवती उत्तम अंतःकरण वाली, सबसे श्रेष्ठ, तेजस्विनी विशेष बुद्धिमति और तरुणी तथा अपने नियमों का पालन करती है। वही यह भी कहां गया है कि वह अमरत्व प्राप्ति का ज्ञान देती है अर्थात अमृतत्व प्राप्ति का ज्ञान कराती हैं।

अज्ञानता को मिटाने वाली देवी के रूप में उषा की इस प्रकार स्तुति की गई है – "आपप्रुषी विभावरि व्यावज्योतिषा नमः।
उषो अनु स्वधामव" (ऋ. ३/५३९/६१)
अर्थात हे उषा! तू सर्वत्र प्रकाश भर दें। प्रकाश से अंधकार को दूर कर और अपनी धारणा शक्ति को बढ़ा और उसकी रक्षा कर।

ऋग्वेद में उषा के संदर्भ में जो सूक्त मिलते हैं उससे ऐसा प्रतीत होता है कि ऋषिगण बौद्धिक के साथ साथ कवि हृदय भी थे। वे आकाश के सौंदर्य पर पृथ्वी की अद्‌भुत वस्तुओं पर भी विचार करके वैदिक सूत्रों के निर्माण द्वारा अपनी आत्मा के बोझ को हल्का करते रहे। ऐसा लगता हैं कि द्योः, वरुण, उषाः, मित्र आदि उनकी काव्यमय चेतना की उपज हैं। वैदिक सूक्तों के प्राचीनतम ऋषि प्राकृतिक दृश्यों को देखकर सरल स्वभाव के कारण अनायास ही अत्यंत प्रफुल्लित हो उठते थे। कवि हृदय होने के कारण उन्होंने प्राकृतिक पदार्थों को ऐसे प्रगाढ़ मनोभावों और कल्पनाओं द्वारा देखा कि वे आत्मा की भावना से परिपूर्ण प्रतीत होने लगे। यही कारण है कि वे सूर्योदय और सूर्यास्त के अद्‌भुत दृश्यों में खो गये क्योंकि ये दोनों ही रहस्यमयी प्राकृतिक घटनायें हैं जो आत्मा को प्रकृति के साथ जोड़ देती हैं। उषा सूक्त निसन्देह ऋग्वेद में सबसे अधिक प्राचीन है। वह एक ऐसी देवी हैं जो प्राकृतिक जगत में प्रतिदिन प्रातःकाल मनुष्यों के समक्ष प्रकट होती हैं। असीम प्रभात बेला, जो प्रत्येक प्रातःकाल चारों ओर प्रकाश और नवजीवन का संचार करती है; उषा देवी के रूप में प्रकट होती हैं।

इस प्रकार प्रकृति के जगत में उषा के आगमन से जहा आनन्द, प्रफुल्लता और स्फूर्ति पैदा होती है वहीं आत्म जगत में जब योगी ध्यानस्थ होता है तो उसमें उषा रूपी चेतना का प्रस्फुटन होना शुरू होता है। आत्मज्ञान की स्थिति ज्ञान रूपी उषा के आगमन की स्थिति है। वह जहां प्रकृति के क्षेत्र में रात्रि की जड़ता को समाप्त करके अपने आलोक से सारे संसार को आलोकित करती है, उसी प्रकार वह आत्म जगत में प्रवेश कर व्यक्ति की चेतना को जागृत करके पूर्ण ज्ञान के लिए मार्ग प्रशस्त करती हैं।

ऋग्वेद में वैसे उषा की अनेक रूपों में स्तुति की गई है लेकिन प्रधानता अंधकार का नाश करने वाली देवी के रूप में ही है। कई स्थानों पर उनकी सोने वाले को जगाने वाली, मनुष्यों का हित करने वाली, शत्रुओं का नाश करने वाली, धन देने वाली के रूप में स्तुति की गई है।

योगी के लिए ध्यान का सबसे अच्छा समय उषःकाल ही माना गया है क्योंकि इस समय मन का स्थिरीकरण जितना अधिक होता है, उतना और किसी समय नहीं हो पाता। इस समय योगी का चित्त अत्यन्त शांत रहता है। उषःकाल में यदि कोई व्यक्ति नियमित रूप ध्यान का अभ्यास करे तो उसके जीवन से दुःख और कष्ट उसी तरह समाप्त हो जायेंगे, जिस प्रकार उषा के आगमन से अंधकार का विनाश हो जाता है।

आर. पी. श्रीवास्तव,
ए ६९, सेक्टर-१९ए,
नोपडा (गाजियाबाद)